गीदड गीदड है और शेर शेर

एक जंगल में शेर-शेरनी का युगल रहता था। शेरनी के दो बच्चे हुए। शेर प्रतिदिन हिरणों को मारकर शेरनी के लिये लाता था दोनों मिलकर पेट भरते थे। एक दिन जंगल में बहुत घूमने के बाद भी शाम होने तक शेर के हाथ कोई शिकार न आया। खाली हाथ घर वापिस आ रहा था तो उसे रास्ते में गीदड का बच्चा मिला।

बच्चे को देखकर उसके मन में दया आ गई; उसे ज़िन्दा ही अपने मुख में सुरक्षा-पूर्वक लेकर वह घर आ गया और शेरनी के सामने उसे रखते हुए बोला- "प्रिये ! आज भोजन तो कुछ मिला नहीं। रास्ते में गीदड का यह बच्चा खेल रहा था । उसे जीवित ही ले आया हूँ। तुझे भूख लगी है तो इसे खाकर पेट भरले। कल दूसरा शिकार लाऊँगा।"

शेरनी बोली- "प्रिय ! जिसे तुमने बालक जानकर नहीं मारा, उसे मारकर मैं कैसे पेट भर सकती हूँ ! मैं भी इसे बालक मानकर ही पाल लूँगी । समझ लूँगी कि यह मेरा तीसरा बच्चा है।"

गीदड का बच्चा भी शेरनी का दूध पीकर खूब पुष्ट हो गया। और शेर के अन्य दो बच्चों के साथ खेलने लगा। शेर-शेरनी तीनों को प्रेम से एक समान रखते थे।

कुछ दिन बाद उस वन में एक मत्त हाथी आ गया। उसे देख कर शेर के दोनों बच्चे हाथी पर गुर्राते हुए उसकी ओर लपके। गीदड के बच्चे ने दोनों को ऐसा करने से मना करते हुए कहा- "यह हमारा कुलशत्रु है। उसके सामने नहीं जाना चाहिये। शत्रु से दूर रहना ही ठीक है।"

यह कहकर वह घर की ओर भागा।शेर के बच्चे भी निरुत्साहित होकर पीछे लौट आये । घर पहुँच कर शेर के दोनों बच्चों ने माँ-बाप से गीदड के बच्चे के भागने की शिकायत करते हुए उसकी कायरता का उपहास किया। गीदड का बच्चा इस उपहास से बहुत क्रोधित हो गया। लाल-लाल आंखें करके और होठों को फडफडाते हुए वह उन दोनों को जली-कटी सुनाने लगा। तब, शेरनी ने उसे एकान्त में बुलाकर कहा कि- "इतना प्रलाप करना ठीक नहीं, वे तो तेरे छोटे भाई हैं, उनकी बात को टाल देना ही अच्छा है।"

गीदड का बच्चा शेरनी के समझाने-बुझाने पर और भी भडक उठा और बोला- "मैं बहादुरी में, विद्या में या कौशल में उनसे किस बात में कम हूँ, जो वे मेरी हँसी उडाते हैं; मैं उन्हें इसका मजा चखाऊँगा, उन्हें मार डालूँगा।"

यह सुनकर शेरनी ने हँसते-हँसते कहा- "तू बहादुर भी है, विद्वान् भी है, सुन्दर भी है, लेकिन जिस कुल में तेरा जन्म हुआ है उसमें हाथी नहीं मारे जाते। समय आ गया है कि तुझ से सच बात कह देनी चाहिये। तू वास्तव में गीदड का बच्चा है। मैंने तुझे अपना दूध देकर पाला है। अब इससे पहले कि तेरे भाई इस सचाई को जानें, तू यहाँ से भागकर अपने स्वजातियों से मिल जा। अन्यथा वह तुझे जीता नहीं छोडेंगे।"
यह सुनकर वह डर से काँपता हुआ अपने गीदड दल में आ मिला।

गीदड़ गीदड़ ही रहता है

एक जंगल में शेर-शेरनी का युगल रहता था। शेरनी के दो बच्चे हुए। शेर प्रतिदिन हिरणों को मारकर शेरनी के लिए लाता था। दोनों मिलकर पेट भरते थे। एक दिन जंगल में बहुत भटकने के बाद भी शाम होने तक शेर के हाथ कोई शिकार न आया। खाली हाथ घर वापिस आ रहा था तो उसे रास्ते में गीदड़ का बच्चा मिला।

बच्चे को देखकर उसके मन में दया आ गई; उसे जीवित ही अपने मुँह में सुरक्षित पकड़ कर वह घर आ गया और शेरनी के सामने उसे रखते हुए बोला- "प्रिये! आज भोजन तो कुछ मिला नहीं। रास्ते में गीदड़ का यह बच्चा खेल रहा था। उसे जीवित ही ले आया हूँ। तुझे भूख लगी है तो इसे खाकर पेट भरलो। कल दूसरा शिकार लाऊँगा।"

शेरनी बोली- "प्रिय! जिस बालक को तुमने बालक जानकर नहीं मारा, उसे मारकर मैं कैसे पेट भर सकती हूँ? मैं भी इसे बालक मानकर ही पाल लूँगी। समझूँगी कि यह मेरा तीसरा बच्चा है।"

गीदड़ का बच्चा भी शेरनी का दूध पीकर खूब पुष्ट हो गया। और शेर के दोनों बच्चों के साथ खेलने लगा। शेर-शेरनी तीनों को प्रेम से एक समान पालते थे।

कुछ दिन बाद उस वन में एक मतवाला हाथी आ गया। उसे देखकर शेर के दोनों बच्चे हाथी पर गुर्राते हुए उसकी ओर लपके। गीदड़ के बच्चे ने दोनों को ऐसा करने से मना करते हुए कहा- "यह हमारा कुलशत्रु है। उसके सामने नहीं जाना चाहिये। शत्रु से दूर रहना ही ठीक है।" यह कहकर वह घर की ओर भागा। शेर के बच्चे भी निरुत्साहित होकर पीछे लौट आए।

घर पहुँच कर शेर के दोनों बच्चों ने माँ-बाप से गीदड़ के बच्चे के भागने की शिकायत करते हुए उसकी कायरता का उपहास किया। गीदड़ का बच्चा इस उपहास से बहुत क्रोधित हो गया। लाल-लाल आँखें करके और होंठों को फड़फड़ाते हुए वह उन दोनों को उल्टी-सीधी सुनाने लगा। तब, शेरनी ने उसे एकान्त में बुलाकर कहा कि- "इतना प्रलाप करना ठीक नहीं, वे तो तेरे छोटे भाई हैं, उनकी बात को टाल देना ही अच्छा है।"

गीदड़ का बच्चा शेरनी के समझाने-बुझाने पर और भी भड़क उठा और बोला- "मैं बहादुरी में, विद्या में या कौशल में उनसे किस बात में कम हूँ जो वे मेरी हँसी उड़ाते हैं; मैं उन्हें इसका मज़ा चखाऊँगा, उन्हें मार डालूँगा।"

यह सुनकर शेरनी ने हँसते-हँसते कहा- "तू बहादुर भी है, विद्वान भी है, सुन्दर भी है, लेकिन जिस कुल में तेरा जन्म हुआ है उसमें हाथी नहीं मारे जाते। समय आ गया है कि तुझे सच बात कह दी जाये। तू वास्तव में गीदड़ का बच्चा है। मैंने तुझे अपना दूध देकर पाला है। अब इससे पहले कि तेरे भाई इस सच्चाई को जानें, तू यहाँ से भागकर अपने स्वजातियों में मिल जा। अन्यथा वह तुझे जीता नहीं छोड़ेंगे।"
यह सुनकर वह डर से काँपता हुआ अपने गीदड़ दल से आ मिला।

अनुवाद - विष्णु कौल एला